218 P
784
M 218P

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1214
10/91

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 784

091.431
S.64S
(784)
IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 193

ग्रामीण ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प।

सुराजी रसिया

जिसमें टींढ़ी, अकाल, सुराज, चर्खा और गांधी बाबा आदि के रसिया हैं।

लेखक—छड़गांव जिला मथुरा निवासी
स्वर्गीय ठा० गुलाबसिंह जी के सुपुत्र
ठाकुर हरनन्दनसिंह 'किसान'
मौ० छड़गांव, डाकख़ाना बरारी, ज़ि० मथुरा

मुद्रक—सरदारसिंह वर्मा
आदर्श प्रेस कसेरट बाज़ार आगरा

प्रथम बरा २००० | मथुरा सं० १९८६, | मूल्य)॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 784
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

ॐ

ईश-प्रार्थना

दोहा

बिलखि-बिलखि करतार तें, अरजी करै 'किसान'।
दीनन की सुधि लीजियो, दीनन के भगवान ॥

रसिया

अब तो भीर परी है भारी मेरी सुधि लीजौ भगवान।
धूप मेह में खेत करें हम,
खून पसीना एक करें हम,
भूखे कैसे हाय मरें हम निकरि चले अब प्रान।
चारों लॅगते चोरन लूटे,
भाग हमारे सबते फूटे,
बंध हमारे कैसे छूटें हाहाकार महान।
अब तो सुधि लीजौ गिरधारी,
हम सब आये सरन तिहारी,
कहै 'किसान' दीन हितकारी करो नाथ कल्यान।

गांधी बाबा

तोकूँ धन्य लँगोटी बाबा तैंने जादू दीनो डार ।

अंगरेजी को मान बिगारयो करी ख्वार सरकार ।
थर-थर ठाड़ो कँपे फिरंगी दिये माँजने मार ॥तोकूं ॥

सात समुन्दर पार फिरंगी आयो बादर फार ।
तेरे मारें एक चली ना फिर्‌यो हाय झकमार ॥तोकूं० ॥

तोप तमंचा लै के ठाड़ो करै फिरंगी बार ।
सत्याग्रह की मार लगाई गई हार सरकार ॥तोकूं०॥

गजी और गाढ़े के मारें खूब मचाई रार ।
लियो सुराज आज गांधी ने घर-घर भई जगार ॥तोकूं०॥

चरखा

चरखा चल्यौ चतुर गांधी को घर-घर चरर-चरर चर्राय ।
याकी दहसत खाइ फिरंगी गयो हाय भयराय ।
मन-मन भावै मूँड़ हलावै, ऊपर ते नर्राय ॥चरखा॥
लंकाशहर में डंका पीटो हिन्दुस्तान बजाय ।
बैठि गयो जब गरो तोप को घरर-घरर घर्राय ॥चरखा॥
बनो विलाइत सासु बिलैया फूली नाहिं समाय ।
या चरखा के डर के मारे थरर-थरर थर्राय ॥चरखा॥
खद्दर की चद्दर के मारें दूरि दलिद्दर जाय ।
झण्डा गढ़यो सुराज सभा को फरर-फरर फर्राय ॥चरखा॥

गाढ़े की फरिया

मैं तो जहर मरूँगी मैयो खाय मँगाय दे फरिया गाढ़े की ।
मलमल की फरिया नहिं चहिये,
अरे ज्यामें सब कछु देख्यो जायँ ॥मंगायदे०॥
सासु-सुसर की लाज न राखे,
अरे निपूती सरकि-सरकि गिर जाय ॥मंगायदे॥
चलै ब्यारि मलमल की फरिया,
अरे निपूती उतरी-उतरी जाय ॥मंगायदे ॥
पतरो लेहंगा, पतरी फरिया,

अरे बु तो फरर-फरर फटि जाय ॥मंगाय दे॥
गजी और गाढ़े के लत्ता,
अरे बु तो बरसन ताऊँ जाय ॥मंगाय दे ॥
लाज ढके पर लाज न आवै,
अरे मैयो मेरे मन कूँ भाय ॥मंगाय दे॥

टींढ़ो-दल

टीढ़ी चरि गई सफा निकरि गई करि गई सफा चट्ट मैदान।
हाय किसान भई कहा तोकूँ,
कहै किसान ठौर नहिं मोकूँ,
या डाइन कूं कैसे रोकूँ,
जीमति लै गई प्रान ॥टींढ़ी चरि गई॥
जहाँ तहाँ अण्डा धरि जावै,
फुदका फुदकि-फुदकि चरि जावै,
उड़नी उड़ि-उड़ि खेतन खावै,
छोड़ति नाहिं निसान ॥टींढ़ी चरि०॥
पहले तो पटवारी लूटै,
जमींदार, सरकारी लूटै,
तापै टींढ़ी भारी लूटै,

मिट गये मान गुमान ।।टींढ़ी चढ़ि गई ।।
घर में भूखे बालक बारे,
मरें न्यार बिन बर्ध लबारे,
अब तो फूटे भाग हमारे ।।सुन लै हे भगवान ।

सुराज

झगड़ा मिट गया भैया सारा अब हुआ सुराज हमारा ।
इस सुराज की नींव तिलक राजा ने खूब जमाई थी ।
इस सुराज के लिये फिरंगी ने घर आग लगाई थी ।।
जलियाँ वाला ने जब सींचा, वही रुधिर की धारा ।। अबहुआ।।
या सुराज के काजे गांधी बाबा घर-घर डोले थे ।
या सुराज के काज हमारे मुँदे पलक तक खोले थे ।।
झोली लै बैरागी बनि गयो, सब घर बार बिसारा ।।अब ।
या सुराज के काजें घर-घर चरखा खूब चलाया था ।।
ज्या सुराज के काजें हमें फिरंगी ने धमकाया था ।
कुरू छेत बारदोली बन गईबै जूझा री बिन मारा ।।अब।।
गाढ़ो गजी पहरि कें दोऊ छाक जो करै गुजारा है ।
कहै किसान सुनो भाई लाला जिही सुराज हमारा है ।।
ठौर-ठौर गामन-गामन में झंडा गढ़ गया न्यारा ।।अब।।

कुम्भ का मेला

मेला जुरयो कुम्भ को भारी अब कैं प्राग राज में जाय ॥
नंगा जुरि खाइबे कूँ आये, साठ लाख न्हाबे कूँ आये।
साहूकार हजारन आये दीने दान लुटाय ॥मेला जुरयो कुँभ ॥
नंगन को सब गात ढकायो, भूखन ने खाइबे कूँ पायो।
रोगिन को सब धर्म कमायो, बैद दिये बैठाय ॥मेला॥
भांति-भांति के खेल खिलौना, लत्ता कपड़ा और बिछौना।
तापै दुख न किसी को होना, जल, दीनों फैलाय ॥मेला०॥
बल्लम टेर हजारन देखे, खोये बचन लामत देखे।
कहै किसान मिल्यौ सुख सब कूँ जो कोई पहुंच्यौ आय ॥मेला॥

विदेशी बाना

छोड़ो यार विदेशी बानो याने ख्वारी करिदई हाय ॥
भूखो मरे किसान पेट भर अन्न न खामन पाय।
पर बिलायती लत्ता बारो साठ क्रोड़ लै जाय ॥छोड़ो॥
मलमल मखमल छींट चिकन लट्ठा में मजा न आय।
लाज गई बैयरि बानी की आरम्पार दिखाय ॥छोड़ो॥
बेगि फटै मेला होय जल्दी धरऊ ही गरि जाय।
गाय और सूहर की चर्बी ताने बीच लगाय ॥छोड़ो॥
कहै 'किसान' कि गांधी बाबा गाढ़ो गजी चलाय।
रोटी मिलै गरीबनु भैया पैसा घर रहि जाय ॥छोड़ो॥

खुश खबरी !   खुश खबरी !!

किसान सभा

किसानों के दुख दूर करने वाली, किसानों का संगठन करने वाली, किसानों की सुधि लेने वाली, किसानों की दशा सुधारने वाली, और किसानों के हितों के लिये लड़ने वाली

किसान सभा

के मेम्बर बनिये और किसानों में सदाचार और संगठन प्रेम भाव का प्रचार करिये। विशेष जानकारी के लिए श्री पं० श्री कृष्णदत्त पालीवाल जो सैनिक सम्पादक आगरा को लिखिये।

ग्रामीण ग्रन्थमाला

हमारे यहाँ इस नाम की अनेकों ऐसी हो छोटी-छोटी पुस्तकें निकला करेंगी, जिनमें सब तरह के मनोहर भजन, रसिये और उत्तम-उत्तम गाने रहेंगे। सभाओं में, बरातों में और पञ्चायतों में बांटने के लिये एक साथ सौ पुस्तक लेने पर २||) रु० सैंकड़ा में देंगे।

मिलने का पता—

(१)
पाराशर पुस्तक भण्डार
आगरा।

(२)
ठाकुर हरनन्दन सिंह
मौ० छड़गांव डा० बरारी
ज़ि० मथुरा